आज
www.ajhindidaily.com
राजधानी

आरयू के हिंदी विभाग में सभ्यता एवं संस्कृति पर व्याख्यान का आयोजन

रांची। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र क्षेत्रीय केंद्र रांची एवं रांची विवि के तत्वावधान में हिंदी विभाग रांची विवि में 25 अप्रैल को सभ्यता और संस्कृति: अंतरावल. बन विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन किया। डा.जंग बहादुर पांडेय, पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग रांची विवि व्याख्यान सत्र के मुख्य वक्ता थे। व्याख्यान की अध्यक्षता रांची विवि के कुलपति डा. रमेश कुमार पांडेय ने की। सम्मानित अतिथि में डा.कमल बोस, विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग, सेंट जेवियर्स कॉलेज रांची, पीके.झा, पूर्व निदेशक दूरदर्शन केंद्र रांची, डा.रामेश्वर साहू, विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग रांची विवि और डा.हीरा नंदन ने इस अवसर पर अपने विचार रखे। कार्यक्रम का आयोजन आईजीएनसीए केंद्र रांची के क्षेत्रीय निदेशक डा.अजय कुमार मिश्रा की देखरेख और मार्गदर्शन में किया गया। डा.मिश्रा ने उपस्थित सभी प्रतिष्ठित

अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और एक समाज और उसकी सभ्यता के विकास में संस्कृति के महत्व के बारे में एक संक्षिप्त परिचय दिया। व्याख्यान के सभापति डा.पांडे ने सत्र के दौरान उपस्थित रहने की अपार प्रसन्नता व्यक्त की और इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए आईजीएनसीए को भी बधाई दी। उन्होंने यह भी समझाया कि न केवल मनुष्य, बल्कि जानवर और पौधे भी एक-दूसरे के साथ संवाद करते हैं और उनकी सभ्यता और संस्कृति भी है। इसके अलावा, मनुष्य और जानवर एक बंधन बनाने के लिए बातचीत करते हैं जहां विभिन्न प्रजा. तियों से संबंधित होने के बावजूद वे संबंतिध हो जाते हैं। मुख्य वक्ता डा.जंग बहादुर पांडेय ने सभ्यता और संस्कृति के बीच संबंध के बारे में बात की और बताया कि वे किस तरह से जुड़े हुए हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि सभ्यता संस्कृति पर निर्भर है। समाज की संस्कृति धीरे-धीरे समय, शिक्षा और ज्ञान के साथ बढ़ती है। सांस्कृतिक विकास के माध्यम से एक सभ्यता का निर्माण होता है। यदि सभ्यता किसी समाज का अंग है तो संस्कृति उसकी आत्मा है। उन्होंने कालिदास के जीवन, रामधारी सिंह दिनकर के कार्यों और संस्कृति और समाज से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का महत्वपूर्ण संदर्भ दिया। सत्र काफी लाभप्रद रहा और छात्रों ने उत्साह के साथ भाग लेकन अपनी रूचि दिखाई। यह एक सूचनात्मक और सफल सत्र था। व्याख्यान के बाद अंजनी कुमार सिन्हा ने अध्यक्ष, मुख्य अतिथि और मंच पर उपस्थित सभी सम्मानित अतिथियों एवं उपस्थित सदस्यों को धन्यवाद दिया।

सभ्यता तन का धर्म है और संस्कृति मन का

जागरण संवाददाता, रांची : मानवेत्तर प्राणियों में भी गहरी संवेदनाएं हैं। संस्कृति के विकास के लिए मानवेत्तर जगत को भी विकसित करना होगा। ये बातें रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. रमेश कुमार पांडेय ने कहीं। वह गुरुवार को स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र व रांची विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित व्याख्यान में बोल रहे थे। विषय था, सभ्यता एवं संस्कृति का अंतरावलंबन। स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के प्रो. जंग बहादुर पांडेय ने कहा कि सभ्यता तन का धर्म है और संस्कृति मन का। मनुष्य के अंतःकरण से सभ्यता का प्रकाशित हो उठना ही संस्कृति है। कई बार जानकारी के अभाव में लोग सभ्यता और संस्कृति को एक मान लेते हैं, लेकिन दोनों एक नहीं हैं। जैसे, सभा में बैठने की योग्यता सभ्यता है और निरंतर संस्कारित होने की क्रिया का नाम संस्कृति है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का उदाहरण देते हुए कहा कि संसार में जो भी सर्वोतम बातें कही, सुनी व लिखी गई हैं, वह संस्कृति है। सभ्यता व संस्कृति में अंतर स्पष्ट करते हुए कहा कि सभ्यता स्थूल है, जबकि संस्कृति सूक्ष्म। इस अवसर पर दूरदर्शन रांची केंद्र के पूर्व निदेशक पीके झा ने कहा कि साहित्य के विद्यार्थियों को भाषा की शुद्धता पर ध्यान देना चाहिए। व्याख्यान के दौरान जमशेदपुर से आए कन्हैया लाल अग्रवाल ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए।

पीजी हिंदी विभाग में आयोजित कार्यशाला में बोलते हुए शिक्षक ● जागरण

आईजीएनसीए व आरयू का सभ्यता और संस्कृतिः अंतरावलंबन पर विशेष व्याख्यान

सभ्यता समाज का अंग है, तो संस्कृति आत्मा : डॉ जेबी पांडेय

रांची | संवाददाता

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), क्षेत्रीय केंद्र रांची और रांची विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी विभाग में गुरुवार को सभ्यता और संस्कृति : अंतरावलंबन' विषय पर एक व्याख्यान का आयोजन हुआ। व्याख्यान की अध्यक्षता रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ रमेश कुमार पांडेय ने की।

मुख्य वक्ता हिन्दी विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ जंग बहादुर पांडेय ने सभ्यता और संस्कृति के बीच संबंध के बारे में बताया कि वे किस तरह से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

उन्होंने कहा कि सभ्यता संस्कृति पर निर्भर है। समाज की संस्कृति धीरे-धीरे समय, शिक्षा और ज्ञान के साथ बढ़ती है। सांस्कृतिक विकास के माध्यम से, एक सभ्यता का निर्माण होता है। यदि सभ्यता किसी समाज का अंग है, तो संस्कृति उसकी आत्मा है। उन्होंने कालिदास के जीवन, रामधारी सिंह दिनकर के कार्यों और संस्कृति और समाज से संबंधित अन्य महत्वपूर्ण ग्रंथों का महत्वपूर्ण संदर्भ दिया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ रमेश कुमार पांडेय ने कहा कि न केवल मनुष्य, बल्कि जानवर और पौधे भी एक-दूसरे के साथ संवाद करते हैं और उनकी भी सभ्यता और संस्कृति है।

सम्मानित अतिथि के रूप में सेंट जेवियर्स कॉलेज के हिन्दी के विभागाध्यक्ष डॉ कमल बोस, दूरदर्शन केंद्र के पूर्व निदेशक पीके झा, विभागाध्यक्ष डॉ रामेश्वर साहू, और डॉ हीरा नंदन ने भी अपने विचार रखे।

इससे पहले आईजीएनसीए के क्षेत्रीय निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा ने समाज और उसकी सभ्यता के विकास में संस्कृति के महत्व के बारे में एक संक्षिप्त परिचय दिया। अंजनी कुमार सिन्हा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आरयू के हिन्दी विभाग में गुरुवार को व्याख्यान में विचार रखते विशेषज्ञ। • हिन्दुस्तान

व्याख्यान

- रांची विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में सभ्यता और संस्कृति के समन्वय पर हुई चर्चा
- व्याख्यान में आरयू सहित अन्य संस्थानों के भी हिन्दी के विशेषज्ञों ने रखे विचार

व्याख्यान में शामिल हिन्दी विभाग के छात्र-छात्राएं। • हिन्दुस्तान

सभ्यता तन का धर्म है और संस्कृति मन का

Publish Date:Fri, 26 Apr 2019 07:46 AM (IST)

रांची मानवेतर प्राणियों में भी गहरी संवेदनाएं हैं। संस्कृति के विकास के लिए मानवेतर जगत का

रांची : मानवेत्तर प्राणियों में भी गहरी संवेदनाएं हैं। संस्कृति के विकास के लिए मानवेत्तर जगत को भी विकसित करना होगा। ये बातें रांची विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. रमेश कुमार पांडेय ने कहीं। वह गुरुवार को स्नातकोत्तर हिंदी विभाग में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र व रांची विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित व्याख्यान में बोल रहे थे। विषय था, सभ्यता एवं संस्कृति का अंतसावलंबन। स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के प्रो. जंग बहादुर पांडेय ने कहा कि सभ्यता तन का धर्म है और संस्कृति मन का। मनुष्य के अंत:करण से सभ्यता का प्रकाशित हो उठना ही संस्कृति है। कई बार जानकारी के अभाव में लोग सभ्यता और संस्कृति को एक मान लेते हैं, लेकिन दोनों एक नहीं हैं। जैसे, सभा में बैठने की योग्यता सभ्यता है और निरंतर संस्कारित होने की क्रिया का नाम संस्कृति है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का उदाहरण देते हुए कहा कि संसार में जो भी सर्वोत्तम बातें कही, सुनी व लिखी गई हैं, वह संस्कृति है। सभ्यता व संस्कृति में अंतर स्पष्ट करते हुए कहा कि सभ्यता स्थूल है, जबकि संस्कृति सूक्ष्म। इस अवसर पर दूरदर्शन रांची केंद्र के पूर्व निदेशक पीके झा ने कहा कि साहित्य के विद्यार्थियों को भाषा की शुद्धता पर ध्यान देना चाहिए। साथ ही अनुवाद में भी अपनी दक्षता विकसित करें। देश में नौकरी की कमी नहीं है, लेकिन अधिकांश लोग नौकरी की जरूरतों के अनुसार स्वयं को तैयार नहीं करते। व्याख्यान के दौरान जमशेदपुर से आए कन्हैया लाल अग्रवाल ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। इस अवसर पर तीन पुस्तकों का विमोचन किया गया। कथा कुंज, निबंध यात्रा व पृथ्वीराज रासो की समीक्षा भी की गई। संचालन इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के राकेश पांडेय ने किया। इस अवसर पर एके मिश्रा, डॉ. हीरा नंदन प्रसाद, डॉ. कमल कुमार बोस, डॉ. जिंदर सिंह मुंडा, डॉ. श्याम कुमार, डॉ. अरुण कुमार, डॉ. सुशील कुमार अंकन, अंजनी सिन्हा, डॉ. लता कुमारी, डॉ. रामकेश्वर पांडेय डॉ. राजीव नयन पांडेय, डॉ. देशराज सिंह, मनु ओझा, आसमां त्रिपाठी समेत स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के कई विद्यार्थी उपस्थित थे।

Posted By: **Jagran**

lecture on 'Civilisation, Culture: Inter-Dependence'

PNS ■ RANCHI

The programme was organized under the supervision and guidance of Dr. Ajay Kumar Mishra, Regional Director, IGNCA, Regional Centre Ranchi. Dr. Mishra welcomed all the eminent guests and participants present and gave a brief introduction about the importance of culture in the development of a society and its civilisation

Indira Gandhi National Centre for Arts, Regional Centre Ranchi organized a lecture on the topic of 'Civilisation and Culture: Inter-dependence' at Department of Hindi, Ranchi University here on Thursday. Dr. Jang Bahadur Pandey, Former HOD, Department of Hindi, Ranchi University was the speaker of the lecture session. The lecture was chaired by Dr. Ramesh Kumar Pandey, Vice Chancellor, Ranchi University. Honoured guests namely, Dr. Kamal Bose, Head of the Department, St. Xavier's' College, Ranchi; P.K. Jha, Former Director, Doordarshan Kendra, Ranchi; Dr. Rameshwar Sahu, Head of Department, Department of Hindi, Ranchi University and Dr. Heera Nandan, graced the occasion.

The programme was organized under the supervision and guidance of Dr. Ajay Kumar Mishra, Regional Director, IGNCA, Regional Centre Ranchi. Dr. Mishra welcomed all the eminent guests and participants present and gave a brief introduction about the importance of culture in the development of a society and its civilisation.

The Chairman of the afternoon, Dr. Pandey, expressed his immense pleasure to be present during the session and also congratulated IGNCA, Regional Centre Ranchi for the venture. He also explained that not only human beings but also the animals and plants communicate with each other and that they also have a civilization and culture of theirs. Also, humans and animals interact to form a bond where inspite of belonging to different species they become related.

Dr. Jang Bahadur Pandey, the Speaker of the afternoon spoke about the relation between civilization and culture, and how they are closely related. The lecture dealt with the analysis of dependence and complementariness of culture ad civilization. He stressed on how civilization is dependent on culture. Culture of a society gradually grows with time, education, knowledge and wisdom. Through cultural development, a civilization is formed. If civilization is the body of a society, culture is its soul.

He gave important references of Kalidas' life, Ramdhari Singh Dinkar's works and other important texts related to culture and society.

The session was interactive and the students showed great interest by participating with enthusiasm.

It was an informative and successful session. After the lecture, Shri Anjani Kumar Sinha thanked the Speaker, Chief Guest and all the respected personalities present on the dias.

रांची विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में कार्यशाला, कुलपति ने कहा

समाज की संस्कृति धीरे-धीरे शिक्षा-ज्ञान के साथ बढ़ती है

लाइफ रिपोर्टर @ रांची

रांची विवि के कुलपति डॉ रमेश कुमार पांडेय ने कहा कि सिर्फ मानव ही नहीं बल्कि जानवर भी संवाद करते हैं. उनकी भी सभ्यता-संस्कृति है. उन्होंने कहा कि समाज की संस्कृति धीरे-धीरे शिक्षा और ज्ञान के साथ बढ़ती है. ये बातें कुलपति ने बुधवार को रांची विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची और रांची विवि के संयुक्त तत्वावधान में सभ्यता एवं संस्कृति अंतरावलंबन विषय पर आयोजित एक आयोजित व्याख्यान में कही. कुलपति ने कार्यक्रम के आयोजन पर प्रसन्नता जतायी. मुख्य वक्ता हिंदी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ जंग बहादुर पांडेय ने कहा कि सभ्यता और संस्कृति एक-दूसरे से जुड़ी हैं. सभ्यता संस्कृति पर निर्भर है. उन्होंने कहा कि संस्कृति विकास के माध्यम से एक सभ्यता का निर्माण होता है. यदि सभ्यता किसी समाज का अंग है तो संस्कृति उसकी आत्मा है.

हिंदी विभाग में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र रांची और रांची विवि के संयुक्त तत्वावधान में सभ्यता एवं संस्कृति अंतरावलंबन विषय पर व्याख्यान हुआ.

ये थे मौजूद

इस दौरान अतिथियों का स्वागत केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक अजय कुमार मिश्रा व धन्यवाद ज्ञापन अंजनी कुमार सिन्हा ने किया. साथ ही हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ रामेश्वर साहू, संत जेवियर कॉलेज के हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ कमल कुमार बोस, दूरदर्शन केंद्र रांची के पूर्व निदेशक पीके झा, डॉ हीरा नंदन ने अपने विचार रखें.

संबंध स्थापित करने के लिए संवाद बढ़ाना आवश्यक : डॉ पांडेय

संवाददाता

रांची : रांची विवि के हिंदी स्नातकोत्तर विभाग में गुरुवार को सभ्यता और संस्कृति : अंतरावलंबन विषय पर व्याख्यान हुआ। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के क्षेत्रीय केंद्र एवं रांची विवि के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ जंग बहादुर पांडेय ने कहा कि केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि जानवर एवं पेड़-पौधे भी एक-दूसरे से संवाद स्थापित करते हैं। उनकी भी अपनी सभ्यता और संस्कृति है। जिस प्रकार मनुष्य और पशु एक बंधन बनाने के लिए बातचीत करते हैं, उसी प्रकार विभिन्न प्रजातियां भी संबंध स्थापित करने के लिए संवाद बढ़ाती हैं। यह आवश्यक है। डॉ पांडेय ने कहा सभ्यता, संस्कृति पर निर्भर है। समाज की संस्कृति धीरे-धीरे समय, शिक्षा और ज्ञान के साथ बढ़ती है। सांस्कृतिक विकास के माध्यम से एक सभ्यता का निर्माण होता है। यदि सभ्यता किसी समाज का अंग है, तो संस्कृति उसकी आत्मा। उन्होंने कालिदास का जीवन, रामधारी सिंह दिनकर के कार्यों और संस्कृति आदि को समाज से संबंधित बताया और उनके उल्लेखनीय ग्रंथों का महत्वपूर्ण संदर्भ दिया। व्याख्यान की अध्यक्षता विवि के कुलपति डॉ रमेश कुमार पांडेय ने की। उन्होंने सभ्यता और संस्कृति को एक-दूसरे का पूरक बताया और इसे मानव जीवन के विकास के लिए आवश्यक बताया। इस दौरान डॉ कमल बोस, पीके झा, डॉ रामेश्वर साहू, डॉ हीरा नंदन ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम को सफल बनाने में आईजीएनसीए क्षेत्रीय केंद्र के निदेशक डॉ अजय कुमार मिश्रा की सराहनीय भूमिका रही। छात्रों ने व्याख्यान को काफी उपयोगी बताया।